B A (Eng) 3rd year, Sem VI, हिन्दी सिनेमा और उसका अध्ययन
Code 62055634

सिनेमा में कैमरे की भूमिका

सिनेमा एक सृजनात्मक कला है। वर्तमान युग में सिनेमा इंसान के प्रकाशित करने वाला अत्यन्त सहज और सरल साधन है। इसका स्वरूप, रूप, अर्थ और आकार इंसान के सर चढ़कर बोलने लगा है। सिनेमा मनुष्य के सपनों को सजा रहा है, संवार रहा है और उसे काल्पनिक दुनिया के साथ यथार्थ से परिचित करता रहा है। वह लोकप्रिय कला, परंपरागत कलाओं का एकत्रीकरण, विश्व संस्कृति का बहुमूल्य खजाना, दुनिया की चौंधियानेवाली चमत्कारिक और सबके लिए उपलब्ध सार्वजनिक कला है। नई तकनीक और विज्ञान इसे और सक्षम, प्रभावशाली और जीवंत बनाने में जुटा है। सिनेमा को मनोरंजन के साधन के रूप में स्थापित करने में कैमरे की बहुत बड़ी योगदान है कैमरा फिल्म को नया जीवन देता है बिना कैमरे के फिल्म का जन्म नहीं हो सकता। सिनेमा फ्रांस की देन है क्योंकि सन् 1850 में फ्रांस के गैसपार्ड-फेलिक्स टारनाॅन ने सबसे पहले अपने स्थिर छाया चित्र कैमरे की सहायता से सिलसिलेवार ढंग से फोटो लिये और मंच पर उसका प्रदर्शन किया। कथा-वाचक के रूप में किसी भी आवाज के माध्यम से, उन कथाओं को चित्रों के साथ मिलाते हुए दर्शकों के समक्ष प्रदर्शित किया। उनके इस प्रयास को दर्शकों ने खूब सराहा। इस सफलता के पश्चात गैसपार्ड ने सन् 1867 में एक अनोखा गुब्बारा बनाया और उस उड़ने वाले गुब्बारे में कैमरा लेकर स्वयं के बैठने का विशेष प्रयोजन किया। इसके पीछे उनका एक ही उद्देश्य था कैमरे का कलात्मक प्रयोग करते हुए प्रकृति की छटाओं पहाड़ो, खेत-खलिहानों, झरनो आदि की क्रमवार तस्वीरे लेना। लोगों ने उनके इस सृजनात्मक प्रयासो की खूब तारीफ की। इस प्रकार सिनेमा के जन्म की दिशा में, गैसपार्ड द्वारा कैमरे के कलात्मक उपयोग को पहला कदम माना जाता है। इनसे प्रेरणा पाकर अन्य वैज्ञानिकों ने भी

Scanned by TapScanner